पंचम अध्याय

'चित्रलेखा' उपन्यास के पात्र --

प्रस्तावना --

१) चित्रलेखा
२) बीजगुप्त
३) कुमारगिरि
४) श्वेतांक
५) यशोधरा

'चित्रलेखा' के अन्य पात्र --

१) मृत्युंजय
२) महाप्रभु रत्नाम्बर
३) विशालदेव

निष्कर्ष ---

प्रस्तावना --

उपन्यास एक लोक है और पात्र उस लोक के प्राणी । उपन्यास और उसके पात्र इसी मृत्यूलोक और मनुष्य की छाया हैं । इसीलिए मानवीय स्वभावों और कार्यों का वर्णन उपन्यास में होता है । यह ठीक है कि उपन्यास के पात्र मनुष्य की भाँति शारीरिक अस्तित्व नहीं रखते, परंतु उनका व्यक्तित्व उसी तरह सजीव होता है जैसा हाड मांस के बने मनुष्य का ।

प्रेमचंद ने कहा है -- ' उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझाता हूँ ।[१] मानव चरित्र के भिन्नत्व में अभिन्नत्व दिखाना उपन्यासकार का कर्तव्य है । इस दृष्टि से यदि उपन्यास का विषय मनुष्य है,तो चरित्र-चित्रण उपन्यास का महत्व-पूर्ण तत्व है । उपन्यासों में पात्रों का होना उतना ही आवश्यक है, जितना शरीर के अंतर्गत प्राण । और मनुष्य का अस्तित्व तो उसके अपने चरित्र में होता है । बिना चरित्र के मनुष्य के माध्य का विधान स्पष्ट नहीं किया जा सकता । चरित्र-चित्रण के माध्यम से ही उपन्यासकार अपना जीवन दर्शन प्रस्तुत करता है और पात्रों में प्राण डालकर उन्हें जीवन के उत्कर्ष- ,घात-प्रतिघात आदि सहने के हेतु संसार में छोड देता है ।उनके मानसिक आवेगों,विचारों तथा प्रवृत्तियों आदि का मौलिक विश्लेषण चरित्र-चित्रण के माध्यम से ही किया जा सकता है ।

प्रतापनारायण टंडन ठीक ही कहते है -- ' वास्तव में उपन्यास का मूल विषय मनुष्य और उसका जीवन होता है । पात्र अथवा चरित्र-चित्रण के माध्यम से उपन्यासकार इस जीवन के विविध रूपों को उपस्थित करता है ।'[२]

चरित्र-चित्रण के अनेक आधार हैं --

१) कथानक के आधार पर पात्रों के भेद

अ) प्रधान पात्र २) गौण पात्र ।

२) प्रधान पात्र में कथानक की दृष्टि से --

अ) पुरूष पात्र ब) नारी पात्र

३) ऐतिहासिक उपन्यास में ---

अ) यथार्थ पात्र ब) कल्पित पात्र

चरित्र-चित्रण के मी गुण हैं ---

१) अनुकूलता --

यह चरित्र-चित्रण का महत्वपूर्ण गूण है । पात्र कथानक के अनुकूल होने चाहिए ।

२) सप्रमाणता --

ये पात्र कुछ व्यक्तित्व के आधार रहते हैं । पात्र में जब अनुकूलता, स्वामाविकता आदि गुण का अमाव नहीं होता तमी इसमें सप्रमाणता की आशा की जा सकती है ।

३) सहृदयता --

इसमें पात्रों को मानवीय होना चाहिए । उन्हें एक-दूसरे से सहानुमूति और संवेदना की अपेक्षा रखना चाहिए ।

४) मौलिकता --

उपन्यास में कम से कम प्रत्येक पात्र के व्यवहार, विचार और आदर्श में मौलिकता का होना जरूरी है ।

इस तरह चरित्र-चित्रण कला की और एक विशेषता बताई गयी है कि उसके द्वारा पात्रों के शील-गुणों और अवगुणों का वास्तविक और स्वामाविक चित्रण अवश्य हो जाय । घटनाओं की सृष्टि द्वारा और कथोपकथनों के सहारे

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

उन पर अधिकाधिक इस प्रकार प्रकाश डाला जाय कि वह मनोवैज्ञानिक सिध्दांतों के बिल्कूल अनुरूप हो । यदि देखा जाय कि तो वास्तव में चरित्र-चित्रण में शील-निरूपण उतना अधिक महत्वपूर्ण नहीं जितना पात्रों के व्यक्तित्व की पुष्टि करना । मनुष्य का' मनुष्यत्व' है उसका व्यक्तित्व - उसके कुछ विशिष्ट गुणों का समन्वय, जो उसे अन्य मनुष्यों से अलग बनता है । इसलिए पात्रों के व्यक्तित्व का विकास चरित्र-चित्रणका मुख्य उद्देश्य समझा जाना चाहिए । ' चित्रलेखा' में चरित्र-चित्रण की यह विशेषता है कि इसमें सारे पात्र अपना अपना निजी व्यक्तित्व रखते है ।

भगवतीचरण वर्मा ने' चित्रलेखा' उपन्यास केवल कथानक को उद्देश्य की दृष्टि में रखकर नहीं लिखा है, बल्कि पात्रों का चयन तथा उनका चरित्र-विकास भी किया है ।' चित्रलेखा' एक समस्या मूलक उपन्यास है । इसी कारण समस्या के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने के लिए पात्रों का चयन हुआ है ।' चित्रलेखा' उपन्यास में महत्वपूर्ण पात्र है नर्तकी' चित्रलेखा ।' उपन्यास के कथानक की धुरी चित्रलेखा कि जो स्वतंत्र,समर्थ नारी के रूप में चित्रित की गयी है, जो अपने दृढ व्यक्तित्व के कारण अपने आसपास की परिस्थितियों का निर्माण स्वयं करती है । उसके अधिकांश कार्य उसकी इच्छा-शक्ति द्वारा संचालित हैं । बीजगुप्त भी संपूर्ण उपन्यास में लेखक के परिस्थिति विषयक दृष्टिकोण का ही प्रतिनिधित्व नहीं करता । वह स्वतंत्र निर्णय लेने में भी समर्थ है । वस्तुत: समस्या मूलक उपन्यासों में पात्रों का चरित्र-चित्रण समस्याओं के साथ रहता है । पात्र उतने स्वतंत्र नही हो सकते जितने - चरित्र-प्रधान या घटना-प्रधान उपन्यासों में । चरित्र प्रधान उपन्यासों में लेखक का ध्यान पात्रों पर केन्द्रित रहता है जबकि समस्यामूलक उपन्यासों में समस्याओंपर । अत: अस्वामाविक नहीं कि पात्र लेखक के दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करें । उपन्यास की इच्छा का अन्धानुसरण अवश्य ही दोष है,जिससे बचने की कुछ अधिक चेष्टा' चित्रलेखा' को अधिक प्रभावोत्पादक बना देती । किन्तु इसे चरित्र - चित्रण की दृष्टि से बहुत भारी दोष नहीं माना जा सकता क्योंकि पूर्वनियोजित कारणों को लेकर निर्मित किए गये इन चरित्रों को अधिक दूर तक मानवीय दृष्टि से देखा जाना संभव नहीं है ।[३]

समस्या मूलक उपन्यासों में पात्र प्रतीक बनकर प्राय: जीवंतता खो देते हैं । ` चित्रलेखा ` में पाप-पुण्य के विरोध में आये हुए पात्रों में प्रतीकात्मकता आने की संभावना थी लेकिन ऐसा नहीं हुआ । प्रतीक होने का अभास करते हुए ये पात्र वास्तविक पात्र हैं । प्रारंभ का भोगी बीजगुप्त, अंत में योगी बन जाता है । जो कुमारगिरि बचपन से योगी है वह बाद में भोगी बन जाता है । चित्रलेखा, बीजगुप्त और कुमारगिरि की कथा को गतिमान करने के लिए मृत्युंजय, श्वेतांक तथा यशोधरा को लिया गया । ऐतिहासिक वातावरण में समस्या की सृष्टी करने के लिए चन्द्रगुप्त एवं चाणक्य - दो पात्रों का चुनाव किया गया । समस्या को स्पष्ट करने एवं लेखक का मंतव्य जो है उसकी उद्घोषणा करने के लिए महाप्रभु रत्नाम्बर की सृष्टि हुयी है । गौण पात्रों में से मधुपाल एवं विशाल देव का निर्माण हुआ है ।

` चित्रलेखा ` उपन्यास के इन पात्रों का परिचय हम स्वतंत्र रूप से करेंगे ।

१) चित्रलेखा --

चित्रलेखा पाटलिपुत्र की अद्वितिय सुंदरी नर्तकी है । उपन्यास की वह प्रधान पात्र है । उसके शारीरिक सौन्दर्य में एक मस्ती है और आकर्षण भी है, जिससे कोई भी व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रहता किन्तु उसके जीवन में एकाध व्यक्ति को छोडकर कोई भी प्रवेश नहीं कर पाता । बडे - बडे शक्तिशाली युवक सामन्त उसका मुख देखते रहते थे पर वह किसी से भी नहीं मिलती । वह स्वयं कहती -- ` व्यक्ति का मेरे जीवन से कोई संबंध नही ।[४]

शारीरिक सौन्दर्य की अपेक्षा चित्रलेखा का मानसिक सौन्दर्य कहीं अधिक आकर्षक है । विलास और वैभव के बीच में रमण करनेवाली एक नर्तकी होते हुए भी वह उच्च कोटि की आध्यात्मिक स्त्री है । उसका मन सबल और दृष्टि पैनी है । वह किसी से भी प्रभावित नहीं होती पर उससे सभी प्रभावित हो जाते हैं । श्वेतांक जैसे ब्रह्मचारी, कुमारगिरि जैसे संयमी उसके तर्कों का लोहा मान लेते हैं और उसके सौन्दर्य से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते ।

` वह सुन्दरी होने के साथ विदुषी भी थी .... उसमें विचारशक्ति और प्रतिभा थी ।`[५]

नर्तकी का समाज में कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं होता । पर चित्रलेखा का सभी सम्मान करते हैं । बीजगुप्त से लेकर सम्राट चन्द्रगुप्त तक उसका आदर करते हैं । उसके संबंध में यशोधरा कहती है कि वह बहुत उच्च कोटि की स्त्री है । मैं तो यहाँ तक कह सकती हूँ कि वह देवी है । जिस मनुष्य ने चित्रलेखा को जान लिया, उसने सौन्दर्य जनित कर्तव्य को जान लिया ।' [६]

चित्रलेखा की मन:शक्ति अत्यंत सबल है । इसका पूर्ण परिचय सम्राट चन्द्रगुप्त की राजसभा में मिलता है । अपनी आध्यात्मिक शक्ति द्वारा कुमारगिरि एक कल्पना जनित लोक का दर्शन सभी सभा को करा देता है । सिर्फ दो व्यक्ति ऐसे थे जिनका मनस-तत्व इतना सबल है कि वे उसकी कल्पना को साकार रूप में नहीं देख पाते । वे हैं चित्रलेखा और चाणक्य । चाणक्य में भी मानसिक शक्ति है पर वे आध्यात्मिक शक्ति के निगूढ रहस्य को नहीं समझ पाते और हार मान लेते हैं , लेकिन चित्रलेखा उसका रहस्य खोलकर समझा देती है ।

चित्रलेखा एक कलाकार है और उसे अपनी कला पर सच्चा गर्व है । वह कला को सर्वश्रेष्ठ समझती है । कला का अपमान उसे असह्य होता है । नृत्य के समय राजसभा में कुमारगिरि के कारण उसका नृत्य स्थगित होता है तो उसे बडा क्षोभ होता है । उसकी दृष्टि में कला दर्शन से किसी माने में कम नहीं । इसी प्रकार मृत्युंजय के स्थान पर उसका नृत्य कुमारगिरि के आने पर बंद हो जाता है तब चित्रलेखा उस स्थान से चला जाना चाहती है । वह कह देती है --' मेरी दृष्टि में कला का सर्वोच्च स्थान है । जो मनुष्य कला का अपमान करता है वह मनुष्य नहीं है, पशु है । मृत्युंजय को कुमारगिरि का स्वागत करने के लिए नृत्य को बंद करा देना मेरा अपमान नहीं है तो क्या ?' [७]

चित्रलेखा में अपने प्रति आत्मसम्मान का भाव अधिक है । जब उस पर किसी प्रकार भी चोटे पहुँचती है तो उसे कभी सहन नहीं होता और प्रत्युत्तर में व्यंग्य द्वारा बदला भी चुका लेती है । कुमारगिरि जब चित्रलेखा से दूर रहने के लिए, उसे स्त्री के रूप में माया और अंधकार समझाता है, तो उसे बडा आघात होता है और

वह कहती है ' प्रकाश पर लुब्ध पतंग को अंधकार का प्रणाम है।'[८] स्त्री के प्रति घृणा करने पर मार्मिक व्यंग है यह इसी प्रकार मृत्युंजय के यहाँ जब एक सामन्त स्त्री उसे कटुवचन कहती है तो वह कह देती है --' अपने सौन्दर्य के बल से अभिमानिनी स्त्रियों को अपना स्वागत कराने के लिए बाध्य करनेवाली को बधाई की कोई आवश्यकता नही।'[९]

चित्रलेखा के व्यक्तित्व में कला और दर्शन का सुन्दर समन्वय है किंतु उसके दार्शनिक सिध्दांत अत्यंत विकृत है। उसमें प्रवृत्ति की प्रधानता है जो उसकी बडी कमजोरी है पर वह अपनी इस कमजोरी को अपने अकाटय और युक्तियुक्त तर्कों के आवरण में छिपाने की चेष्टा करती है। चूँकि प्रवृत्ति अस्थिर होती है और प्रवृत्ति के वश में होने के कारण मनुष्य अपने विचारपूर्ण सिध्दांतों पर टिक नहीं पाता, इसीलिए उसकी दार्शनिकता विकृत हो जाती है। इस तत्व का सुंदर निदर्शन चित्रलेखा के चरित्र में मिलता है। वह प्रवृत्ति के वश में होते हुये भी अपने किसी कार्य को अनौचित्य को सिध्द करती है। राजसभा में कुमारगिरि की आध्यात्मिक शक्ति को वह केवल इंद्रजाल ही बताती है पर जब प्रवृत्ति वश कुमारगिरि की ओर वह आकृष्ट होती है,तो वे ही सिध्दांत रूचिकर जान पडने लगते है। वह श्वेतांक से कहती है कुमारगिरि योगी है और उसमें शक्ति है,उसका सत्य और ईश्वर ये दोनोंही उसकी कल्पना-जनित थे, पर साथ ही मनुष्य में इतनी उत्कृष्ट कल्पना का होना असंभव है।' इसी तरह बीजगुप्त से जब तक उसका सम्पर्क रहता है, वह उनसे प्रेम करती है किंतु जबकुमारगिरि से ही प्रेम करने को उद्यत हो जाती है और यहाँ तक कहती है कि उसका संबंध कुमारगिरि से जन्मजन्मांतर से चला आ रहा है। उसके तर्कों में बल है ज्ञान का पुट भी है और उसमें स्थिरता नहीं।

चित्रलेखा प्रवृत्ति-प्रधान स्त्री है। यही उसकी निर्बलता है। कुमारगिरि के यौवन और सौन्दर्य पर आसक्त होकर वह बीजगुप्त के सच्चे प्रेम को ठुकरा देती है। उसकी प्रवृत्ति बढे उद्दाम वेग से उसे ढकेलती है और अंत में उसे कुमारगिरि की कामुकता का शिकार बनाकर ही छोडती है।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

यद्यपि प्रवृत्तिवश चित्रलेखा पथभ्रष्ट हो जाती है पर बीजगुप्त के प्रति उसका अनुराग भी समीप था । बीजगुप्त को धोका देने के कारण उसे असह्य आत्मिक कष्ट होता है । पतित होने के कारण वह 'पश्चाताप' की अग्नि में दिन-रात्र जला करती है ।" उसका कार्यक्रम दिन-रात रोना था । वह बीजगुप्त से प्रेम करती थी ।बीजगुप्त के प्रति उसके हृदय में कितना गहन प्रेम था,उसने उतने दिनों के वियोग के बार अनुभव किया था।"[१०] बीजगुप्त के लिए वह अंत में अपना सर्वस्व दान करके भिखारिणी बनकर उसके साथ हो लेती है ।

इस प्रकार 'चित्रलेखा' उपन्यास की नायिका चित्रलेखा उपन्यास का प्रमुख पात्र है । विविध पहलूओं को उजागर करते हुए चित्रलेखा हमारे सामने उजागर हुयी है ।' चित्रलेखा' समस्या मूलक होते हुए भी चित्रलेखा के व्यक्तित्व में एक कलाकार, प्रेमिका,शारीरिक सौन्दर्य के साथ मानसिक सौन्दर्य की पुतली प्रबल मन: शक्तिवाली गुण दिखाई देते हैं । इसीलिए चित्रलेखा उपन्यास का प्रमुख पात्र है ।

२) बीजगुप्त --

उपन्यास का दूसरा पात्र है बीजगुप्त । सम्राट चंद्रगुप्त की राजसभा के प्रधान सामन्तों में है । उसका नाम प्रत्येक व्यक्ति जानता है । चित्रलेखा की दासी के शब्दों में वह पाटलीपुत्र का सबसे सुंदर तथा प्रभावशाली युवक सामंत है । न तालनेवाली धन-वैभव और सौन्दर्य का वह स्वामी है । साथ ही वह कला-प्रेमी भी है ।" [११]

बीजगुप्त पच्चीस वर्ष का एक नवयुवक है पर इस अल्प अवस्था में भी उसे जीवन का यथेष्ट अनुभव है । उस अनुभव पर उसकी गंभीर प्रकृति-जनित दार्शनिकता का सुन्दर आवरण है । उसका शरीर हृष्ट-पुष्ट और सुन्दर है पर यौवन के मद में वह बह नहीं जाता । इस बात की गुरुता को उसके सारे परिचित लोग महसूस करते है । बीजगुप्त के बारे में वृध्द और अनुभवी मृत्युंजय का कथन है कि 'वह बीजगुप्त उन्माद का काल है,भविष्य बहुत लम्बा चौठा है और बीजगुप्त यथेष्ट शिक्षित है । वह इस समय अनुभव सागर में तिर रहा है ।" [१२]

अपने शिक्षा-काल में बीजगुप्त ने अपने गुरू रत्नाम्बर के साथ काफी भ्रमण कर लिया था - सारे देश देशान्तर, हिम-श्रेणियों, उपत्यकाओं और वनों को देख डाला था। उस छोटी अवस्था में गुरू के साथ हिमालय के दुर्गम्य स्थान में उसने स्त्री-पुरूष केश-वश्यभावी संबंध को समझ लिया था।

बीजगुप्त के कथनों में अनुभव युक्त सार सदा निहित रहता है। इसीलिए सभी उसका आदर करते हैं। उसके अनुभवों से यशोधरा सबसे अधिक प्रभावित होती है। जीवन में अनुभव ही काम आता है क्योंकि वह व्यावहारिक है और ज्ञान तथा कल्पना पूर्व अनुमानित तथ्य हैं। इसीलिए अनुभव पर पूरी कथा भर में जोर दिया गया है। बीजगुप्त के अनुभव बड़े व्यापक है। वे अनुभव उसने अनेक स्थितियों से गुजर करके प्राप्त किये हैं। इसलिए वह परिस्थितियों को बलवान समझाता है। वह एक स्थल पर बतलाता है कि ' संसार की पाठशाला में अनुभव की शिक्षाप्रणाली से मुझे परिस्थितियों ने पढाया है।' [१३]

बीजगुप्त के चरित्र की प्रमुख विशेषता है कि उसका प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व। चित्रलेखा के सौन्दर्य से सारा सामन्त समाज अभिभूत हो जाता है, पर वह नहीं। प्रथम परिचय में ही चित्रलेखा के पास 'प्रेम' प्राप्त करने जाता है, उसके सौन्दर्य को भोगने की इच्छा से नहीं। चित्रलेखा के पास जाकर वह अपने व्यक्तित्व को नहीं खोता। चित्रलेखा जब व्यक्ति से दूर रहना चाहती है तो वह स्पष्ट कह देता है -- ' व्यक्तित्व जीवन में प्रधान है और व्यक्ति से समुदाय का भाग बनता है। जब व्यक्ति वर्जित है तो उस व्यक्ति को समुदाय का भाग बनना अपना ही अपमान करना है।' [१४] यह कथन उसके व्यक्तित्व प्रेम का सच्चा प्रदर्शन है। फिर वह उन स्थानों पर भी जाना छोड देता है जहाँ चित्रलेखा का नृत्य होता है।

बीजगुप्त एक सच्चा प्रेमी है। वह प्रेम के गूढ तत्व भली भाँति समझाता है। प्रेम की मार्मिक व्यंजना करते हुए वह कहता है कि ' उन्माद और ज्ञान में जो भेद है, वही वासना और प्रेम में है .... जब पागलपन का प्रहार होता है, ज्ञान लोप होता हुआ विदित होता है, पर उन्माद बीत जाने के बाद ही ज्ञान स्पष्ट हो जाता है। यदि ज्ञान अमर नहीं तो प्रेम भी अमर नहीं, पर मेरे मत में ज्ञान अमर है -- ईश्वर

का एक अंश है, साथ ही प्रेम भी ।" [१५]

प्रेम सम्बन्धी जैसे बीजगुप्त के वचन है,वैसे ही उसके आचरण । प्रेम की रक्षा के लिए वह अनेक कष्ट भोगता है । यदि वह चाहता तो यशोधरा जैसे निष्कलंक, पवित्र और लावण्यमयी स्त्री को पत्नी बनाकर चित्रलेखा द्वारा पहुँचाये हुए अपने घाव को भी भर सकता था और मनमाना जीवन का सुख भोग सकता था पर उसने ऐसा न करके प्रेम का सच्चा नाता निबाहा । चित्रलेखा के प्रति उसका प्रेम आत्मिक और शाश्वत है ।

बीजगुप्त उच्च कोटि का मानस्वी,धीर,संयत और दूरदर्शी व्यक्ति है । यह चित्रलेखा और कुमारगिरि के अवश्यभावी पतन की बात पहले ही श्वेतांक को बतला देता है । हृदय की बात समझ लेने की उसकी क्षमता अद्भूत है । चित्रलेखा अपने मन की बात बहुत कुछ उससे छिपाने की चेष्टा करती है, पर वह समझ लेता है कि वह कुमारगिरि की ओर आकृष्ट हो गयी है ।

बीजगुप्त सत्यता-पोषक और उदारमतवाला व्यक्ति है । वह समाज के रूढियों के बन्धन से मुक्त है और अपने दृष्टिकोण को बतलाने में काफी स्पष्टवादी है । चित्रलेखा एक नर्तकी होने के कारण समाज में उसका स्थान कम है । फिर भी बीजगुप्त उससे सच्चा प्रेम, करता है यहाँ तक की वह उसे अपनी पत्नी मानता है । इस बात को बडी निर्भीकता के साथ समाज के लोगों के सामने प्रकट कर देता है । श्वेतांक से मृत्युंजय से और कुमारगिरि से वह नि:संकोच बतला देता है कि चित्रलेखा उसकी पत्नी है --` लोक की दृष्टि से मैं अविवाहित हूँ पर मैं वास्तव में विवाहित हूँ । चित्रलेखा मेरी पत्नी है । यद्यपि चित्रलेखा का पाणिग्रहण मैंने शास्त्रानुसार नहीं किया है और समाज के नियमों के अनुसार नहीं किया है और समान के नियमों के अनुसार मैं कर भी नहीं सकता,फिर भी चित्रलेखा का और मेरा संबंध पति-पत्नि का सा है .... मेरा अब विवाह करना असंभव है ।" [१६]

बीजगुप्त का दृष्टिकोण बडा ही उदार है । विवाह के संबंध में उसके विचार अत्यंत विवेकपूर्ण है ..` स्त्री और पुरूष के चिरस्थायी संबंध को ही विवाह कहते हैं ।

बीजगुप्त ने अपने त्याग और क्षमा के बल पर देवता का पद पा लिया। श्वेतांक ,चित्रलेखा,मृत्युंजय,यशोधरा और सम्राट चन्द्रगुप्त सभी ने मुक्तकंठ से उसके देवत्व को स्वीकार किया। चित्रलेखा के लिए उसने असाधारण त्याग किया। अपना धन,वैभव,सुख और सामंत पद तक छोड़कर भिकारी का जीवन उसने अपनाया। क्षमा मे उसके चरित्र को और भी मुखरित कर दिया है। चित्रलेखा ने उसे असह वियोग का दुख दिया और स्वयं पतित भी हुयी, यह सब जानते हुए भी उसने चित्रलेखा से घृणा नहीं किया और अंत में उसे स्वीकार भी कर लिया।

इस तरह हम देखते हैं कि बीजगुप्त आदर्श चरित्र की उत्कृष्ट कल्पना है। उसमें मनुष्यता है, पर हृदय की कोमलता का उसमें सामन्जस्य है। उसके प्रेम की तन्मयता में जलन और आकर्षण है पर उसमें विराग की शांति भी है। इस तरह बीजगुप्त का व्यक्तित्व निखर आया है।

३) कुमारगिरि --

कुमारगिरि एक योगी है। योगी वह केवल इस दृष्टि से है कि उसने संसार छोड दिया था। इसलिए भी कि उसने मानवीय प्रवृत्तियों का दमन,संयम और नियम के द्वारा कर डाला था। संसार से दूर रहकर वह उसकी कठोर वास्तविकताओं से पूर्णत: अपरिचित है। सच्चा योग संसार पर विजय प्राप्त करना है,तो इस दृष्टि से वह निर्बल हैं।

कुमारगिरि में अहंभावना प्रधान है। वह अपने को अजेय समझता है। उसे अपने ज्ञान और अपनी तपस्या पर गर्व है। जब रत्नाम्बर विशालदेव को लेकर उसके पास शिक्षा दिलाने के लिए आते हैं, उस समय वह बड़े गर्व के साथ कहता है कि उसके स्थान में पाप हो ही नहीं सकता। इसी प्रकार राजसभा में भी वह अपनी हार नहीं स्वीकार करता।

अपने संयमपूर्ण जीवन के द्वारा उसने अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त कर ली थीं। जिसका परिचय वह सभी सभा में देता है। उसने कल्पना-शक्ति के सहारे पूरी

राजसभा को ईश्वर और सत्य के दर्शन करा दिए । यह सब वह अपनी आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा करने में समर्थ हुआ । चित्रलेखा यद्यपि उससे प्रभावित होती पर कुमारगिरि के सम्बन्ध में उसकी धारणा ऊँची है । चित्रलेखा कुमारगिरि के बारे में कहती है --" कुमारगिरि योगी है और उसमें शक्ति है । उसका सत्य और ईश्वर ये दोनों ही उसकी कल्पना जनित थे पर साथ ही मनुष्य में इतनी उत्कृष्ट कल्पना का होना भी असंभव है ... कुमारगिरि में सृजन की शक्ति है ।" [१७]

योगी कुमारगिरि में यद्यपि व्यावहारिक ज्ञान नहीं है फिर भी उसका पठित ज्ञान कम नहीं (ब्रह्म,आत्मा,साधना और तपस्या के संबंध में उसके विचार विद्वतापूर्ण हैं जिनका प्रतिपादन वह बड़े तर्कपूर्ण ढंग से करता है । इसीलिए समाज में और शिष्यों के बीच उसका बहुत आदर है ।

कुमारगिरि के चरित्र की सबसे बड़ी कमजोरी उसकी अनुभवहीनता है । इंद्रिय विषयों पर सच्ची विजय प्राप्त करने का उसने अभ्यास कभी नहीं किया था, इसी-लिए वह पराजित हुआ था अंधकार से । और अंधकार से पराजित होना स्वाभाविक ही है । स्त्री से तो बड़े बड़े साधक पराजित हुये हैं[१८] जिस चित्रलेखा को वह तुच्छ दृष्टि से देखकर माया और अंधकार समझाता है, उसी के प्रति उसका आकृष्ट हो जाना उसकी निर्बलता है ।

वह पूर्ण रूप से प्रवृत्ति के वश में है । जब अपनी पराजय के बाद वह पहली बार चित्रलेखा से एकांत में मिलता है, तभी उसके सौन्दर्य से वह प्रभावित होता हुआ दिखाई पड़ता है । उसे स्वयं भी अपनी दुर्बलता का बोध होता है । प्रवृत्ति आगे चलकर भीषण रूप धारण करती है और वह पशुवत आचरण करने लगता है । जब उसकी निर्बलता के चित्रलेखा उसकी ओर से हटने लगती है ,उसमें प्रतिहिंसा क्रोध और धोका जैसे दैत्य उत्पन्न हो जाते हैं । चित्रलेखा के शरीर का उपभोग करने में ही वह अपनी विजय समझाता है और बीजगुप्त के विवाह की झूठी बात बताकर, एक विचित्र मानसिक अवस्था में एक प्रकार से बलात्कार कर डालता है ।

अपनी कामुकता को कुमारगिरि अज्ञानवश प्रेम समझता है । सत्य प्रेम में त्याग और क्षमा का अंश होता है और वासना पशुता और झूठ का । कुमारगिरि ने केवल वासना का अनुभव किया प्रेम का नहीं । वासना का उन्माद जब समाप्त हो जाता है,तो फिर वह चित्रलेखा से घृणा भी करता है । लेकिन जब कुमारगिरि अपने किये पर चित्रलेखा से कहता है कि उसने जो कुछ किया था वह चित्रलेखा के प्रेम में अंधा होकर । उस समय चित्रलेखा के द्वारा उसके वास्तविक रूप प्रकट होता है । वह कहती है कि वासना के कीडे । तुम प्रेम क्या जानो ? तुम अपने लिए जीवित हो,ममत्व ही तुम्हारा केन्द्र है तुम प्रेम करना क्या जानो ? प्रेम बलिदान है,आत्म-त्याग ममत्व का विस्मरण है । तुम्हारी तपस्या और तुम्हारा ज्ञान - तुम्हारी साधना और तुम्हारी आराधना यह सब भ्रम है, सत्य से कोसों दूर है ।" [१९]

इस तरह कुमारगिरि के चरित्र को जब हम देखते हैं तो यह स्पष्ट ही हो जाता है कि एक योगी जिसका अपने मन पर पूरा अधिकार है, वह भी एक नर्तकी चित्रलेखा के समीप आते ही पिघल जाता है । वासना में डूब जाना चाहता है । कुमारगिरि योगी से अंत में भोगी बन जाता है ।

श्वेतांक --

श्वेतांक महाप्रभु रत्नाम्बर का शिष्य एवं ब्रह्मचारी था । उसका क्षेत्र था अनुभवरहित अध्ययन और उसका ध्येय था ज्ञान । वह पच्चीस वर्ष का था और उतने ही काल में उसने दर्शनों तथा स्मृतियों का अध्ययन कर लिया था । उसने व्याकरण और साहित्य पढा था । काव्य में प्रेम के सजीव वर्णनों को उसने ध्यान से पढा था, उनको समझने की चेष्टा की थी,पर समझ न सका था । स्त्री को वह जानता था,यौवन की मादकता से उसे परिचय न था ।

अनुभव और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए बीजगुप्त के पास रहने आया था यहाँ उसे यही शिक्षा प्राप्त करनी थी कि वह इच्छाओं और वासनाओं पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा करे । बीजगुप्त उसे बार-बार समझाता है --

` तुमने अभी संसार में प्रवेश किया है, तुम संसार के अनुभवों से रहित हो । न जाने कितनी बार तुम्हें अनुभव की परीक्षा की कसौटी पर चढना पडेगा । उस समय तुम्हें कर्तव्याकर्तव्य का विचार करना पडेगा, इच्छाएँ प्रबल रूप धारण करके तुम्हें सतावेंगी और तुम्हें उनका दमन करना पडेगा ।'[२०] निर्बलता पर विजय प्राप्त करने में श्वेतांक का चरित्र आदर्श है ।

चित्रलेखा से प्रथम सम्पर्क होने पर ही वह मदिरा पान कर लेता है,उसके सौन्दर्य पर आसक्त हो जाता है,अन्य स्थल पर वह यशोधरा के प्रेम में पडकर बीजगुप्त की कटु आलोचना भी कर डालता है, वह क्रोधित हो जाता है, यह सब उसकी अनुभव हीनता के प्रमाण है । पर वह अपनी भूलों को नि:संकोच स्वीकार करके क्षमा याचना कर लेता है । चित्रलेखा,बीजगुप्त और यशोधरा सबके सामने वह अपनी दुर्बलता पर लज्जित होता है और आगे अपनी भूलों को न दुहराने का प्रण करता है । उसका सच्चा पश्चाताप होता है । इसीलिए चित्रलेखा और यशोधरा उसका सम्मान और आदर करने लगती है ।

श्वेतांक का हृदय स्फटिक मणि की भाँति साफ है । वह बीजगुप्त को अपना स्वामी मानता है और किसी भी स्थिति में उसकी आज्ञा पालन करना अपना धर्म समझता है । चित्रलेखा से प्रेम करने लगने को वह अपना अपराध समझता है और बीजगुप्त के चरणों में गिरकर कह डालता है,` स्वामी,मैंने आपके साथ विश्वासघात करने का अपराध किया है । मैंने उस स्त्री से प्रेम करने का अपराध किया है जो आपसे प्रेम करती है और जिससे अत्म प्रेम करते हैं और साथ ही जो मेरी स्वामिनी है ।'[२१]

बीजगुप्त उसकी परीक्षा लेता है,यों कहकर कि` वह तुम्हें आत्म-समर्पण करने पर प्रस्तुत हो जाती तो तुम क्या करते ? `उस समय श्वेतांक कितना स्पष्ट उत्तर देता है तो ` मैं शायद स्वामी से क्षमा प्रार्थना भी न करता और स्वामी के साथ गुरुतर अपराध कर देता ।'[२२] यह उसकी स्वच्छ हृदयता का द्योतक है ।

` चित्रलेखा` के सारे पात्रों में श्वेतांक ही ऐसा ही जिसमें ` मनुष्य` का वास्तविक चित्र मिलता है । उसका हृदय कोमल है । अपमान से वह दु:खी होता है,

प्रेम करता है और अपनी असमर्थता से क्षुब्ध भी होता है । वह निर्धन था और निर्बल भी । इस बात को वह सदैव अनुभव करता है --` समर्थ के लिए इसमें गलती नहीं ... मुझे ही ले लो,मैं आर्य बीजगुप्त का हूँ । उनकी आज्ञा ही मेरी इच्छा है - मेरा कर्तव्य है । मुझमें भी व्यक्तित्व है,पर वह व्यक्तित्व किस काम का ? मैं पराधीन हूँ ।' २३

श्वेतांक का कर्तव्य पालन अद्वितीय है । बीजगुप्त की प्रत्येक आज्ञा वह बिना किसी विरोध के पालन करता है । कर्तव्य के आगे वह प्रेम को महत्व नही देता ।उसे यशोधरा से प्रेम है, पर उसे छोडकर जाने में उसे कभी आपत्ति नहीं होती । जब बीजगुप्त यशोधरा से विवाह करने के लिए उद्युत होता है तो श्वेतांक को घोर मानसिक कष्ट होता है । वह रो देता है पर वह अनधिकार चेष्टा कभी नहीं करता । वह बीजगुप्त के लिए एक सच्चे सेवक की भाँति त्याग करने को तैयार हो जाता है । जब बीजगुप्त श्वेतांक के साथ यशोधरा का सम्बन्ध निश्चित करके सर्वस्व दान करता है,तो वह रो देता है और कहता है --` नहीं । नही । स्वामी मुझे यह स्वीकार नहीं । मैं कितना पापी हूँ - स्वामी मुझे क्षमा करो - मैं जाता हूँ, मुझे क्षमा करो । मैंने आपके जीवन को नष्ट किया है -- आप मुझ नराधम पर दया क्यों कर रहे हैं मुझे स्वीकार नहीं है ।' २४

इस तरह` चित्रलेखा` में श्वेतांक का चरित्र भी निखर आया है ।

यशोधरा --

` चित्रलेखा` की यशोधरा एक कली है,जिसमें सौरभ है और पराग है किन्तु मुकुलित नहीं है । उसने मधुकाल के मुक्त समीर में स्नान नही किया । वह मृत्युंजय की बेटी है । चित्रलेखा और यशोधरा स्त्री के दो रूप हैं । उनमें विषमता दिखाई देती है --` यशोधरा प्रेम करने की प्रतिमा थी- उसका भोलापन,उसकी प्रशांत तथा सुधासिंचित आँखे - उसका लज्जा और तेज से विभूषित अतिसुन्दर मुख मंडल - चित्रलेखा की मादकता यशोधरा में न थी ।' २५

चित्रलेखा और यशोधरा दोनों में भेद था । एक देवी थी तो दूसरी दानवी थी । एक ओर चित्रलेखा में उन्माद की वृत्ति थी तो दूसरी ओर यशोधरा में शांति

थी । चित्रलेखा में प्रधानता मादकता थी तो यशोधरा में शांति अथाह सिंधु की भाँति थी, जिसमें पड़कर मनुष्य अपने को भूल जाता है । चित्रलेखा, उसका नृत्य उसकी सजीवता का प्रतिमूर्ति थी । उसके जीवन में हलचल थी और यशोधरा मृत्यु की शांति ।

यशोधरा में एक आकर्षण था, पवित्रता थी । वह अनिंद्य सुंदरी थी। यशोधरा का यौवन सुधा और उल्लास का मिश्रण था । उसमें गर्व की उच्छृंखलता न थी, उसमें लज्जा की शोभा थी ।[२६] यशोधरा एक नारीत्व की आदर्शवाद से युक्त पवित्र नारी थी, वह धर्म के विश्वास की प्रतिमूर्ति थी । अपने इन गुणों से विभूषित होते हुए भी वह निरीह भोली बालिका है । उसके जीवन का कोई अनुभव नहीं । भारतीय समाज की नारी का वह सजीव चित्र है जो अपने बालकपन में ही ब्याह दी जाती है, जो अपने प्रितम के प्रति प्रेम की अपेक्षा श्रध्दा और आदर अधिक रखती है । उसके हृदय में बीजगुप्त के प्रति श्रध्दामिश्रित अनुराग है । प्रेम की तीव्रता और संवेदना का अनुभव उसे कभी नहीं होता श्वेतांक जब एकांत में उससे प्रेम प्रकट करता है तो उसे आश्चर्य होता है ।

भारतीय नारी की भाँति वह भी घर के भीतर बंद रहनेवाली स्त्री है । संसार के प्रलोभनों और सुख-दु:ख आदि का उसे कोई अनुभव नही । उसने कदाचित कोई दूसरा देश भी नहीं देखा था । इसलिए बीजगुप्त के भ्रमण संबंधि वर्णन और दार्शनिक विचारों से वह अत्याधिक प्रभावित होती है ।

चित्रलेखा के अन्य पात्र ---

१) मृत्युंजय --

मृत्युंजय पाटलिपुत्र के एक वयोवृध्द सामंत है । आर्यश्रेष्ठ मृत्युंजय जन्म से क्षात्रिय होते हुए भी कर्म से ब्राह्मण थे । उनके भवन में उल्लास - विलास के स्थान में त्याग और विराग का अधिपत्य था । लोग उनकी उपमा विदेह से देते थे और वे इस उपमा के योग्य भी थे । सारा नगर मृत्युंजय से परिचित था । मृत्युंजय का क्षेत्र क्रीडा और कोलाहल से भरा हुआ जनक न था, उनका क्षेत्र था उपासना और ध्यान - निरन्तर और एकान्त । मृत्युंजय की एक मात्र संतान यशोधरा थी । उनके पास धन

और वैभव की कमी नहीं थी । नगर के सारे सामन्तो में उनकी गणना थी और राज्यसभा में उनका आसन उँचा था । वे उनकी साधना विशाल थी और उनमें आत्मआत्मिक बल और आध्यात्मिक ज्योति भी थी ।

२) महाप्रभु रत्नाम्बर --

`चित्रलेखा` उपन्यास की प्रमुख समस्या पाप-पुण्य की है । इस समस्या की उद्घोषणा महाप्रभु रत्नाम्बर के द्वारा हुयी है । श्वेतांक तथा विशालदेव के वे गुरू रहे है । पाप और पुण्य की खोज में श्वेतांक को बिजगुप्त के पास और विशालदेव को योगी कुमारगिरि के पास भेजते हैं । उनमें तप और साधना से युक्त आत्मिक बल है । महाप्रभु रत्नाम्बर ज्ञानी हैं ।

३) विशाल देव --

विशालदेव अनुभव रहित ब्राह्मण ब्रह्मचारी था । आराधना के आधारपर ज्ञान ग्रहण करना उसका क्षेत्र हैं । पाप और पुण्य का पता लगने के लिए विशालदेव योगी कुमारगिरि का शिष्य बन जाता था ।

निष्कर्ष --

भगवतीचरण वर्मा जी ने `चित्रलेखा` के पात्रों का चयन तथा उनका चरित्र केवल कथानक की दृष्टि से नहीं किया है । चित्रलेखा के पात्र समस्या के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते है । उपन्यास का प्रारंभ,विकास,अंत और पात्रों के स्वभाव एवं उनकी नियति सब कुछ पूर्वनिश्चित है । लेखक के लिए यह चुनौती होती है कि किसी ऐसे पूर्व नियोजित अभियान में वह पात्रों का सहज मानव के रूप में निर्माण कर ले । भगवती बाबू ने इस चुनौती का सफलता पूर्वक सामना किया है ।

`चित्रलेखा` उपन्यास का प्रधान पात्र है नर्तकी चित्रलेखा । लगता है कि लेखकने `चित्रलेखा` पात्र को ही महत्व देकर उपन्यास का निर्माण किया है । उपन्यास

में प्रारंभ से अंत तक कथानक चित्रलेखा के कारण विकसित हुआ है। पूरे उपन्यास की वह धुरी है। पात्रों में परस्पर विरोधी तत्वों का समावेश योग और भोग का द्वंन्द्व प्रदर्शित करने के लिए किया गया है और इसका चित्रलेखा उत्तम उदाहरण है। चित्रलेखा भाव छिपाने से भी अत्यंत कुशल है। सबसे पहले अन्तद्वन्द्व का आरंभ चित्रलेखा में ही होता है। प्रेम को विभिन्न स्तरों पर आधारित यह अंतद्वन्द्व दृष्टव्य होता है।

बीजगुप्त और कुमारगिरि का परिचय 'उपक्रमणिका' में ही दे दिया गया है, जिसके लिए श्वेतांक की जिज्ञासा को आधार बनाया गया है। वही रत्नाम्बर और विशालदेव को समस्या के हेतू चित्रित किया गये हैं। यशोधरा एवं मृत्युंजय आदि शेष पात्रों को लेखक ने सब सामने लाया है, जब उपन्यास आठ परिच्छदों की यात्रा तय कर चुका है। पात्रों की आवश्यकता होने पर ही परिचित करना लेखक की एक विशेषता दृष्टिगोचर होती है।

इस तरह भगवतीचरण वर्मा के पात्रों के चयन की यह विशेषता बन गयी है कि उन्होंने बीजगुप्त को महान दिखलाया है और चित्रलेखा को दुर्बलता से युक्त, फिर भी चित्रलेखा का व्यक्तित्व पाठक को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। अत: हम यह कह सकते हैं कि 'चित्रलेखा' उपन्यास में सुन्दरी चित्रलेखा ही महत्वपूर्ण एवं प्रधान पात्र है।

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

संदर्भ

१	प्रेमचंद	- साहित्य का उद्देश्य	पृ.६०
२	प्रतापनारायण टंडन	- उपन्यास कला	पृ.१६३
३	कुसुम वार्ष्णेय	- भगवतीचरण वर्मा : चित्रलेखा से सीधी सच्ची बातें तक	पृ.७१-७२
४	भगवतीचरण वर्मा	- चित्रलेखा	पृ.१२
५	-वही-	- वही	पृ.३०
६	-वही-	- वही -	पृ.९२
७	-वही-	- वही -	पृ.७३
८	- वही -	- वही -	पृ.२९
९	- वही -	- वही -	पृ.७१
१०	- वही -	- वही -	पृ.१६९
११	- वही -	- वही -	पृ.१३
१२	- वही -	- वही -	पृ.६९
१३	- वही -	- वही -	पृ.१२१
१४	- वही -	- वही -	पृ.२१
१५	- वही -	- वही -	पृ.६७
१६	- वही -	- वही -	पृ.७७

१७	भगवतीचरण वर्मा	-	चित्रलेखा	पृ.५५
१८	- वही -		- वही -	पृ.४३
१९	- वही -		- वही -	पृ.१६०
२०	- वही -		- वही -	पृ.२७
२१	- वही -		- वही -	पृ.२६
२२	- वही -		- वही -	पृ.२७
२३	- वही -		- वही -	पृ.१२३
२४	- वही -		- वही -	पृ.१६८
२५	- वही -		- वही -	पृ.९०-९१
२६	- वही -		- वही -	पृ.६९